

Title: Need to construct an overbridge at Pachawali Choraha in Etawah railway station of Uttar Pradesh.

श्री प्रेमदास (इटावा) : सम्माननीय सभापति जी, आपने मुझे महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। मैं आपके माध्यम से माननीय रेल मंत्री महोदया से कहना चाहूंगा कि हमारे देश में वर्ष 1853 में रेलें चलाई गईं। आप जानते ही हैं कि 1853 और आज की जनसंख्या में कितना बड़ा अन्तर आ गया है। आज रेलों का आधुनिकीकरण हो रहा है। दिल्ली में मेट्रो रेल चल रही है, लेकिन गांव और देहातों में जो रेल लाइनें हैं उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

महोदय, दिल्ली से हावड़ा जाने वाली रेल लाइन पर इटावा जनपद पड़ता है, जो मेरा संसदीय क्षेत्र है। उसमें 5 लाख की पॉपुलेशन है। जब रेल पटरी बनाई गई थी, तब वह शहर के किनारे बनाई गई थी, लेकिन समय के साथ-साथ शहर की आबादी बढ़ती रही और अब हालत यह है कि रेलवे स्टेशन शहर के बीच में पड़ता है। मेरी आपके माध्यम से रेल मंत्री जी से मांग है कि सैयद बाबा के पुल से पचावली चौराहे तक एक पैदल पुल बनाया जाए, जिससे एक्सीडेंट कम हों। उस स्टेशन से अनेक गाड़ियां गुजरती हैं और प्रति घंटा तीन-चार गाड़ियों के गुजरने का एवरेज है। मेरी मांग है कि जो छोटे-छोटे कार्य और कमियां हैं, उन्हें रेल विभाग शीघ्र दूर करे।

महोदय, रेल मंत्री जी ने दिनांक 25 फरवरी को सदन में रेल बजट प्रस्तुत करते हुए तमाम रेलों को चलाने की घोषणा की थी। यह बात सही है कि देश में यदि रेल की फोर लाइन नहीं बनेंगी, तो देश में रेलों का कोई अर्थ नहीं रहेगा। यह गांव, गरीब और देश के अधिकांश लोगों से जुड़ा हुआ मामला है। इतना कह कर ही मैं अपनी बात को समाप्त करता हूँ।